Check for updates

OPEN ACCESS

Volume: 3

Issue: 1

Month: March

Year: 2024

ISSN: 2583-7117

Published: 30.03.2024

Citation:

Miss. Nanda Rajak, Dr. Siya Ram Yadav "**माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक विश्लेषण: सागर जिले का अध्ययन**" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 3, no. 1, 2024, pp. 39–52.

DOI:

10.69968/ijisem.2024v3i139-52

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक विश्लेषण: सागर जिले का अध्ययन

Miss. Nanda Rajak[1], Dr. Siya Ram Yadav[2]

[1]*Research Scholar, Swami Vivekanand University Sagar M.P.*
[2]*Professor, Education Department, Swami Vivekanand University.*

सारांश

यह शोध अध्ययन माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तर की तुलना पर केन्द्रित है। अध्ययन का उद्देश्य संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, आत्म-सम्मान, आत्म-प्रभावकारिता, जीवन अभिवृत्ति एवं समग्र मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना था। शोध में 600 छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया, जिसमें प्रत्येक स्तर एवं लिंग के अनुसार तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण 'टी- परीक्षण' विधि द्वारा किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि कुछ मानसिक स्वास्थ्य घटकों में दोनों शैक्षणिक स्तरों के विद्यार्थियों के मध्य समानता पाई गई, जबकि कुछ घटकों–जैसे शारीरिक स्वास्थ्य, आत्म-प्रभावकारिता, जीवन अभिवृत्ति में उल्लेखनीय अंतर पाया गया। वहीं, लिंग आधारित तुलना में भी विभिन्न घटकों में आंशिक अंतर देखने को मिला। यह अध्ययन विद्यालयी स्तर, वातावरण और लिंग के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य में विद्यमान भिन्नताओं को समझने में सहायक सिद्ध होता है तथा इसके आधार पर विद्यार्थियों के मानसिक विकास हेतु शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं को उपयोगी सुझाव प्रदान किए गए हैं।

कीवर्ड: मानसिक स्वास्थ्य, छात्र-छात्राएँ, माध्यमिक विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तुलनात्मक अध्ययन, टी-परीक्षण, संज्ञानात्मक, आत्म-प्रभावकारिता, जीवन अभिवृत्ति, लिंग भिन्नता।

परिचय

यह निर्विवाद है कि बालक के जन्म के पश्चात् उसके सम्पूर्ण जीवन में शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अत्यन्त आवश्यक होता है, क्योंकि मानसिक रूप से स्वस्थ्य हुए बिना वह अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं कर सकता। बालक के सर्वांगीण विकास में मस्तिष्क की स्वस्थता अनिवार्य है, और इसमें शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि बालक मानसिक रूप से संतुलित होगा, तो वह शिक्षा को प्रभावी ढंग से ग्रहण कर पाएगा, अन्यथा उसकी शैक्षिक प्रगति बाधित होगी। मानसिक स्वास्थ्य न केवल उसकी शैक्षिक आकांक्षाओं, अध्ययन की आदतों और लक्ष्यों को प्रभावित करता है।

बल्कि उसका सामाजिक समायोजन और व्यवहार भी इससे जुड़ा होता है। मानसिक रूप से स्वस्थ बालक विषम परिस्थितियों में भी संतुलित व्यवहार करता है, और समाज व परिवार में प्रिय बना रहता है। संवेगात्मक स्थिरता तथा उचित-अनुचित का बोध भी मानसिक स्वास्थ्य की ही देन है। इतिहास में शिक्षा पहले अध्यापक केन्द्रित थी, किन्तु अब यह बालक केन्द्रित हो चुकी है, जिसमें बालक की रुचियों, योग्यताओं व मानसिक स्थिति को आधार बनाया गया है। चूँकि बालक राष्ट्र की अमूल्य निधि है, अतः उसकी मानसिक दृष्टि को सबल बनाए बिना राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं। मानसिक स्वास्थ्य से ही विनम्रता, सत्यता, सहिष्णुता, ईमानदारी जैसे गुणों का विकास होता है, जो उसके सामाजिक, सांस्कृतिक व व्यक्तिगत संतुलन का परिचायक है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति को आत्म-अनुशासन, समायोजन व संतुलन की क्षमता प्रदान करता है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। शिक्षा और समाज एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं, और शिक्षा ही वह शक्ति है जो मनुष्य को अन्य जीवों से भिन्न बनाती है। मानसिक स्वास्थ्य की नींव बाल्यावस्था में रखी जाती है, और प्राचीन काल से ही पूर्वजों ने इसके महत्व को समझते हुए इस अवस्था में विशेष ध्यान देने की बात कही है। यदि बालक मानसिक रूप से अस्वस्थ होगा, तो उसकी पढ़ाई में रुचि नहीं बनेगी और वह लाभ प्राप्त नहीं कर सकेगा। अध्यापकों का कर्तव्य है कि वे छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को समझें और उन्हें उचित मार्गदर्शन दें। मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि शैक्षिक सफलता, नागरिक जिम्मेदारी, और जीवन मूल्य तभी विकसित हो सकते हैं जब छात्र मानसिक रूप से स्वस्थ हों। बालक की मानसिक क्रियाओं जैसे स्मरण, निरीक्षण, तर्क आदि के विकास से ही मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन संभव है। विशेषकर किशोरावस्था में मानसिक विकास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, और इस अवस्था में बालकों की जिज्ञासा, रचनात्मकता तथा निर्णय क्षमता तीव्र गति से विकसित होती है।

समस्या की उत्पत्ति

पूर्व में शिक्षा प्रणाली पूर्णतः अध्यापक-केन्द्रित थी, जहाँ बालकों की मानसिक स्थिति, रुचि व योग्यताओं की उपेक्षा की जाती थी, किन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक-केन्द्रित हो चुकी है, जहाँ उसके मानसिक स्वास्थ्य को विशेष महत्व दिया जाता है। यदि बालक मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होगा, तो वह शिक्षा में रुचि नहीं ले पाएगा और उसका सर्वांगीण विकास बाधित होगा। किशोरावस्था अनेक मानसिक, संवेगात्मक और शारीरिक परिवर्तनों की अवस्था होती है, जिससे इस काल में मानसिक संतुलन बनाये रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। मानसिक अस्वस्थता बालकों में भय, निराशा, असुरक्षा और कुसमायोजन उत्पन्न करती है, जिससे उनकी शिक्षा और सामाजिक समायोजन प्रभावित होते हैं। चूँकि मस्तिष्क ही सभी क्रियाओं का संचालन करता है, अतः उसका संतुलन विद्यार्थियों की सफलता के लिए आवश्यक है। इन्हीं कारणों से शोधकर्त्री ने "उच्चतर माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (सागर जिले के संदर्भ में)" विषय को चयनित किया, ताकि किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर समाज व राष्ट्र हित में समाधान के उपाय खोजे जा सकें।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक जीवन की तेज़ी, प्रतियोगिता और मानसिक

दबावों ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। विद्यालयों में शिक्षा के दबाव, संसाधनों की कमी, पारिवारिक तनाव, सामाजिक असमानताएँ और असुरक्षित वातावरण जैसे कारक किशोरों की मानसिक स्थिरता को बाधित करते हैं। मानसिक रूप से अस्वस्थ छात्र शिक्षा में पिछड़ते हैं और समायोजन में कठिनाई अनुभव करते हैं। किशोरावस्था में तर्क, कल्पना, समायोजन एवं चिंतन क्षमता तेजी से विकसित होती है, अतः इस अवस्था में संतुलित मानसिक स्वास्थ्य का होना अत्यंत आवश्यक है। संतुलित मानसिक स्वास्थ्य न केवल छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करता है। यह उनके जीवन में सकारात्मक सोच, आत्मनियंत्रण, संवेदनशीलता और सामाजिक सहभागिता को भी बढ़ावा देता है। अवसाद, चिंता व मानसिक असंतुलन जैसे लक्षण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। अतः वर्तमान समय की आवश्यकता है कि किशोर छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाए। इन्हीं सभी तथ्यों के दृष्टिगत शोधकर्त्री ने "उच्चतर माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (सागर जिले के संदर्भ में)" विषय को चुनकर इस समस्या की गहराई से पड़ताल करना उचित समझा।

सन्दर्भित साहित्य का पुनरावलोकन

1. हे एवं डगलस (2003) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर छात्रों की सामान्य स्व आत्मप्रत्यय एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि छात्र अभिभावक सम्बन्ध अति महत्वपूर्ण पाये गये एवं अभिभावकों में संवेगात्मक स्थिरता अधिक पाई गई।
2. चौधरी मीनाक्षी एवं आराधना (2006) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर छात्रों की उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि और मानसिक स्वास्थ्य के मध्य अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि उच्च एवं निम्न दोनों गुरपों के मानसिक स्वास्थ्य में भिन्नता पाई एवं उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोरां का मानसिक स्वास्थ्य अधिक अच्छा पाया गया।
3. रहमत उल्लाह टी.के. राजू एम. ब्ही. आर. (2007) ने विद्यालयी छात्र-छात्राओं के मध्य समायोजन की समस्या का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि छात्र-छात्राओं के मध्य समायोजन की योग्यता कक्षा के अध्ययन निर्देशन और स्कूल की व्यवस्था पर आश्रित पाई गई।
4. हुसैन ए. कुमार और हुसैन ए. (2008) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत किशोर छात्रों की तनाव, भग्नाशा एवं समायोजन का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि निजी एवं सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं के मध्य तनाव भग्नाशा एवं समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।
5. गुप्ता गरिमा एवं सुशील कुमार (2010) ने किशोर विद्यार्थियों की स्वयं की प्रभावकारिता और संवेगात्मक बुद्ध से मानसिक स्वास्थ्य के बीच सम्बन्धों का पता लगाने के लिए अध्ययन

किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि संवेगात्मक बुद्ध और स्वयं की प्रभावकारिता का मानसिक स्वास्थ्य के साथ सकारात्मक सम्बन्ध होता है। साथ ही बालकों का स्वास्थ्य संवेगात्मक बुद्ध और स्वयं की प्रभावकारिता बालिकाओं की तुलना में अच्छी पाई गई।

6. जैन मृदुला (2010) ने कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन निराशा एवं आकांक्षाओं के स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के आकांक्षा का स्तर उच्च पाया गया एव कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन एवं निराशा का स्तर निम्न पाया गया।
7. सिंह आर. पी. (2012) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य सृजनात्मकता के सम्बन्ध में समायोजन, निराशा एवं आकांक्षा के स्तर का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि उच्च सृजनात्मकता एवं निम्न सृजनात्मकता के स्तर पर छात्रों के समायोजन निराशा एवं आकांक्षा के स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।
8. बेलमुरूगन एवं बालकृष्ण (2013) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
9. नमेश कुमार एवं अन्य (2014) ने विद्यालय जा रहे छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने बाले प्रभाव का एक अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक- सांस्कृतिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है।
10. श्रीवास्तव एवं माथुर (2014) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्र के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं-छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन
4. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।

5. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राएं एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्र के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध योजना प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सागर जिले के उच्चतर माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना की गई है। शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि अपनाई, जिसमें करुणाशंकर मिश्र एवं निधि श्रीवास्तव द्वारा विकसित मानसिक स्वास्थ्य सूची का प्रयोग किया गया। सूची में मानसिक स्वास्थ्य के 7 आयाम – संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, आत्म-प्रभावकारिता, आत्म-सम्मान और जीवन दृष्टिकोण – को मापा गया।

600 विद्यार्थियों (300 छात्र, 300 छात्राएँ) का स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से चयन किया गया, जिसमें 40 विद्यालयों को शामिल किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं "टी" परीक्षण जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का प्रयोग किया गया। मानसिक स्वास्थ्य इन्वेंटरी को वैधता (फेस वैलिडिटी, इन्टर-डायमेंशन कोरिलेशन) और विश्वसनीयता (स्प्लिट हाफ रिलीबिलिटी) के माध्यम से पुष्ट किया गया।

तालिका 1 मानसिक स्वास्थ्य आयामों के अनुसार वस्तुओं की संख्या

Sl. No.	Mental Health Dimension	No. of Items	Inventory Item Numbers
1	Cognitive	08	1, 8, 15, 22, 29, 36, 43, 50
2	Social	08	2, 9, 16, 23, 30, 37, 44, 51
3	Emotional	08	3, 10, 17, 24, 31, 38, 45, 52
4	Physiological	08	4, 11, 18, 25, 32, 39, 46, 53
5	Self-esteem	08	5, 12, 19, 26, 33, 40, 47, 54
6	Self-efficacy	08	6, 13, 20, 27, 34, 41, 48, 55
7	Life Attitude	08	7, 14, 21, 28, 35, 42, 49, 56

तालिका 2 MHI मदों के कुल सहसम्बन्ध

Item	R	Item	R	Item	R	Item	R	Item	R	Item	R	Item	R	Item	R
1	.57	8	.50	15	.56	22	.60	29	.43	36	.49	43	.31	50	.45
2	.67	9	.60	16	.49	23	.51	30	.30	37	.53	44	.45	51	.36
3	.51	10	.45	17	.44	24	.53	31	.46	38	.50	45	.44	52	.41
4	.39	11	.37	18	.42	25	.49	32	.54	39	.37	46	.53	53	.46
5	.59	12	.58	19	.46	26	.37	33	.41	40	.45	47	.44	54	.38
6	.51	13	.52	20	.43	27	.53	34	.42	41	.40	48	.32	55	.42
7	.53	14	.54	21	.52	28	.55	35	.46	42	.43	49	.47	56	.38

तालिका 3.स्प्लिट हाफ रिलीबिलिटी

Group	Cognitive	Social	Emotional	Physiological	Self-esteem	Self-efficacy	Life Attitude	Total
Boys	.55	.59	.62	.72	.63	.71	.67	.90
Girls	.63	.80	.73	.68	.67	.64	.80	.95
Total	.59	.71	.68	.70	.65	.68	.74	.92

तालिका .4 अंतर-आयामी सहसंबंध गुणांक

Group	Cognitive	Social	Emotional	Physio-logical	Self esteem	Self-efficacy	Life attitude	Total
Cognitive		.76	.82	.77	.73	.77	.79	.89
Social	.76		.81	.79	.78	.71	.88	.92
Emotional	.80	.81		.79	.78	.75	.83	.92
Physiolo	.77	.79	.79		.77	.71	.83	.90
Self esteem	.73	.78	.78	.77		.73	.79	.89
Self-efficacy	.77	.71	.75	.71	.73		.73	.85
Life attitude	.79	.88	.83	.83	.79	.73		.93
Total	.89	.92	.92	.90	.89	.85	.93	

तालिका 5 पुरुष छात्रों के लिए एमएचआई प्रतिशत मानदंड

Dimension	5%	10%	25%	50%	75%	90%	95%
Cognitive	16	18	21.8	24	27.3	29.3	31
Social	14	18	22	25	28	30	31
Total Score	116	129.6	154.8	176	191	200	209.05

तालिका 6 महिला छात्रों के लिए एमएचआई प्रतिशत मानदंड

Dimensions of MHI	Group	Percentile						
	Boys	5	10	25	50	75	90	95
Cognitive	Boys	16	18	21.8	24	27.3	29.3	31
Social	Boys	14	18	22	25	28	30	31
Emotional	Boys	15.95	18	21.8	26	28	30	31
Physiological	Boys	14	18	22	27	29	31	31
Self esteem	Boys	14	17	21	25	28	30	31
Self-efficacy	Boys	13	16	20	23	27	29.1	30
Life attitude	Boys	14	18	22	26	30	31	31.05
Total	Boys	116	129.6	154.8	176	191	200	209.05

तालिका 7 न्यादर्श संरचना (Sample Structure)

विद्यालय	छात्र	छात्राएँ	कुल विद्यार्थी
उच्चतर माध्यमिक	150	150	300
माध्यमिक विद्यालय	150	150	300
कुल	**300**	**300**	**600**

सारणीयन, विश्लेषण, व्याख्या एवं आरेख

किसी भी शोध में मात्र आँकड़ों का संकलन कर लेने से ही अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती है। इसके लिए शोध अध्ययन में संकलित मूल प्रदत्तों को बोधगम्य एवं अर्थपूर्ण बनाने की दृष्टि से उनका सारणीयन एवं विश्लेषण आवश्यक होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रदत्तों को उपयुक्त सारणियों में व्यवस्थित तथा संगठित करना आवश्यक होता है। सारणीयन प्रदत्तों को उनके गुण-धर्म तथा विशेषताओं के अनुसार व्यवस्थित कर सूचीबद्ध करने की क्रिया है।

तालिका 8 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के समग्र छात्र-छात्राओं एवं माध्यमिक विद्यालय के समग्र छात्र-छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=600)

क्र.	घटक	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के समग्र छात्र) छात्राएँ -300)		माध्यमिक विद्यालय के समग्र छात्र छात्राएँ (300)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
							1.96	2.59
		M	SD	M	SD	CR	0.05	0.01
1	संज्ञानात्मक	30.14	6.42	31.15	6.18	1.96	S	NS
2	सामाजिक	29.16	5.45	30.12	6.12	2.02	S	NS
3	भावनात्मक	28.15	5.80	29.20	5.90	2.20	S	NS
4	शारीरिक	29.30	5.40	27.15	5.12	5.01	S	S
5	आत्म सम्मान	28.25	5.21	28.30	5.16	.118	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	29.15	5.15	28.12	5.20	2.44	NS	NS
7	जीवन अभिवृत्ति	30.32	5.95	27.20	5.10	6.90	S	S
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	204.47	15.25	201.24	14.16	2.71	S	S
	df						1.96	2.59

तालिका 8 के अनुसार उच्चतर माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के समग्र छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों में तुलनात्मक अंतर देखा गया। संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक क्षेत्रों में CR मान क्रमशः 1.96, 2.02 और 2.20 है, जो 0.05 स्तर पर तो महत्वपूर्ण है, परंतु 0.01 स्तर पर नहीं, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के इन घटकों में सामान्य समानता पाई जाती है। आत्म-सम्मान (CR = 0.118) एवं आत्म-प्रभावकारिता (CR = 2.44) में कोई भी स्तर पर महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, अतः ये भी समान हैं। शारीरिक (CR = 5.01) एवं जीवन अभिवृत्ति (CR = 6.90) में दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण अंतर है, जिसमें उच्चतर माध्यमिक छात्रों का स्तर अधिक है। समग्र मानसिक स्वास्थ्य में भी CR मान 2.71 पाया गया, जो दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य स्तर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

तालिका 9 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=300)

क्र.	घटक	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र) 150)		माध्यमिक विद्यालय के छात्र) 150)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD	CR	0.05	0.01
1	संज्ञानात्मक	29.15	5.15	28.15	5.18	2.20	S	NS
2	सामाजिक	29.18	5.10	30.20	5.15	1.72	NS	NS
3	भावनात्मक	27.16	5.12	30.25	5.70	4.95	S	S
4	शारीरिक	30.18	5.40	28.15	5.12	3.34	S	S
5	आत्म सम्मान	31.16	5.28	30.16	5.19	1.65	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	30.20	5.20	27.20	5.10	5.05	S	S
7	जीवन अभिवृत्ति	26.18	5.11	30.45	5.30	7.15	S	S
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	203.51	15.20	204.56	15.35	2.24	S	NS
	df						1.96	2.59

तालिका 9 में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की तुलना प्रस्तुत की गई है। संज्ञानात्मक घटक में CR मान 2.20 है, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है, लेकिन 0.01 स्तर पर नहीं, जिससे संकेत मिलता है कि दोनों समूहों के बीच इस क्षेत्र में आंशिक अंतर है। सामाजिक और आत्म-सम्मान में कोई भी स्तर पर अंतर महत्वपूर्ण नहीं है (CR = 1.72 व 1.65), जिससे स्पष्ट होता है कि ये दोनों घटक समान स्तर के हैं। भावनात्मक (CR = 4.95), शारीरिक (CR = 3.34), आत्म-प्रभावकारिता (CR = 5.05) और जीवन अभिवृत्ति (CR = 7.15) में दोनों स्तरों (0.05 और 0.01) पर महत्वपूर्ण अंतर पाया गया, जिसमें माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के स्कोर अधिक रहे, सिवाय शारीरिक एवं आत्म-प्रभावकारिता के, जहां उच्चतर माध्यमिक छात्रों का प्रदर्शन बेहतर रहा। समग्र मानसिक स्वास्थ्य में CR मान 2.24 है, जो केवल 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुल मानसिक स्वास्थ्य में दोनों समूहों के बीच हल्का अंतर है, परंतु कोई निर्णायक श्रेष्ठता स्पष्ट नहीं है।

तालिका 10 में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की तुलना की गई है। संज्ञानात्मक (CR = 1.65), सामाजिक (CR = 1.89), भावनात्मक (CR = 0.372), शारीरिक (CR = 0.078), आत्म-सम्मान (CR = 1.59), आत्म-प्रभावकारिता (CR = 1.85), जीवन अभिवृत्ति (CR = 1.10) तथा समग्र मानसिक स्वास्थ्य (CR = 0.082) सभी घटकों में किसी भी स्तर (0.05 या 0.01) पर कोई भी अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया। इसका अर्थ यह है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तर में कोई उल्लेखनीय भिन्नता नहीं है, और दोनों समूहों की मानसिक स्थिति तुलनात्मक रूप से समान है।

तालिका 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=300)

क्र.	घटक	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राएँ)150)		माध्यमिक विद्यालय के छात्राएँ)150)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD	CR	0.05	0.01
1	संज्ञानात्मक	26.15	4.95	27.11	5.10	1.65	NS	NS
2	सामाजिक	29.24	5.15	28.14	4.98	1.89	NS	NS
3	भावनात्मक	30.40	5.12	30.18	5.21	.372	NS	NS
4	शारीरिक	31.15	5.60	31.10	5.55	0.078	NS	NS
5	आत्म सम्मान	30.30	5.14	31.24	5.17	1.59	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	30.18	5.21	29.16	5.15	1.85	NS	NS
7	जीवन अभिवृत्ति	25.52	4.98	26.15	4.96	1.10	NS	NS
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	202.94	14.45	203.08	15.15	0.082	NS	NS
	df						1.96	2.59

तालिका 11 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=300)

क्र.	घटक	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र)150)		माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ)150)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	**SD**	**M**	**SD**	**CR**	**0.05**	**0.01**
1	संज्ञानात्मक	29.45	5.15	27.11	5.10	3.95	S	S
2	सामाजिक	29.18	5.10	28.14	4.98	1.79	NS	NS
3	भावनात्मक	27.16	5.12	30.18	5.21	5.22	S	S
4	शारीरिक	30.18	5.40	31.10	5.55	1.45	NS	NS
5	आत्म सम्मान	31.16	5.28	31.24	5.17	0.133	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	30.20	5.20	29.16	5.18	0.176	NS	NS
7	जीवन अभिवृत्ति	26.18	5.11	26.15	4.96	0.051	NS	NS
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	203.51	14.28	203.08	15.15	0.254	NS	NS
	df						1.96	2.59

तालिका 11 में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की तुलना की गई है। संज्ञानात्मक क्षेत्र में छात्रों का माध्य (29.45)

छात्राओं (27.11) से अधिक है और यह अंतर दोनों स्तरों (0.05 एवं 0.01) पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है (CR = 3.95)। इसी प्रकार, भावनात्मक क्षेत्र में छात्राओं का माध्य (30.18) छात्रों (27.16) से अधिक है और यह अंतर भी दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है (CR = 5.22)। जबकि सामाजिक, शारीरिक, आत्म-सम्मान, आत्म-प्रभावकारिता, जीवन अभिवृत्ति एवं समग्र मानसिक स्वास्थ्य जैसे अन्य सभी घटकों में CR मान महत्वपूर्ण नहीं पाए गए, जिससे इन क्षेत्रों में दोनों समूहों के बीच कोई विशेष अंतर नहीं है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र संज्ञानात्मक दृष्टि से छात्राओं की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं, वहीं छात्राएँ भावनात्मक दृष्टि से छात्रों से बेहतर हैं, परंतु अन्य सभी मानसिक स्वास्थ्य घटकों में दोनों समूह तुल्य हैं।

तालिका 12 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=300)

क्र.	घटक	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ)150)		माध्यमिक विद्यालय के छात्र)150)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD	CR	0.05	0.01
1	संज्ञानात्मक	26.95	4.95	28.15	5.18	2.05	S	NS
2	सामाजिक	29.24	5.15	30.20	5.15	1.62	NS	NS
3	भावनात्मक	30.40	5.12	30.25	5.70	0.241	NS	NS
4	शारीरिक	31.15	5.60	28.15	5.12	5.34	S	S
5	आत्म सम्मान	30.30	5.14	30.16	5.19	0.234	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	30.18	5.21	27.20	5.10	5.06	S	S
7	जीवन अभिवृत्ति	25.52	4.98	30.45	5.30	8.31	S	S
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	202.94	14.45	204.56	15.35	0.941	NS	NS
	df						1.96	2.59

तालिका 12 में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की तुलना की गई है। संज्ञानात्मक क्षेत्र में छात्रों का माध्य (28.15) छात्राओं (26.95) की अपेक्षा अधिक है, और यह अंतर 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण (CR = 2.05) पाया गया। शारीरिक (CR = 5.34), आत्म-प्रभावकारिता (CR = 5.06) एवं जीवन अभिवृत्ति (CR = 8.31) के क्षेत्रों में भी छात्रों के माध्य अधिक हैं और ये अंतर 0.01 स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिससे संकेत मिलता है कि इन तीनों घटकों में माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं की तुलना में स्पष्ट रूप से श्रेष्ठ हैं। जबकि

सामाजिक, भावनात्मक, आत्म-सम्मान एवं समग्र मानसिक स्वास्थ्य जैसे अन्य घटकों में दोनों समूहों के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र शारीरिक, आत्म-प्रभावकारिता एवं जीवन अभिवृत्ति जैसे पहलुओं में छात्राओं की तुलना में बेहतर मानसिक स्वास्थ्य प्रदर्शित करते हैं, जबकि अन्य घटकों में दोनों समूह तुल्य हैं।

तालिका 13 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=300)

क्र.	घटक	माध्यमिक विद्यालय के छात्र)150)		उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ)150)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD	CR	0.05	0.01
1	संज्ञानात्मक	29.45	5.15	26.15	4.95	5.67	S	S
2	सामाजिक	29.18	5.10	29.24	5.15	.101	NS	NS
3	भावनात्मक	27.16	5.12	30.40	5.12	5.48	S	S
4	शारीरिक	30.18	5.40	30.15	5.60	0.047	NS	NS
5	आत्म सम्मान	31.16	5.28	30.30	5.14	1.43	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	30.20	5.20	30.18	5.21	0.333	NS	NS
7	जीवन अभिवृत्ति	26.18	5.11	25.52	4.98	1.134	NS	NS
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	203.51	14.28	204.94	14.45	.864	NS	NS
	df						1.96	2.59

तालिका 13 में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की तुलना प्रस्तुत की गई है। संज्ञानात्मक क्षेत्र में छात्रों का माध्य (29.45) छात्राओं (26.15) से स्पष्टतः अधिक है और यह अंतर 0.01 स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण (CR = 5.67) पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस क्षेत्र में छात्र अधिक सक्षम हैं। इसके विपरीत, भावनात्मक क्षेत्र में छात्राओं का माध्य (30.40) छात्रों (27.16) की अपेक्षा अधिक है और यह अंतर भी 0.01 स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण (CR = 5.48) सिद्ध हुआ, जो दर्शाता है कि छात्राएँ भावनात्मक रूप से अधिक सशक्त हैं। अन्य सभी घटकों – सामाजिक, शारीरिक, आत्म-सम्मान, आत्म-प्रभावकारिता, जीवन अभिवृत्ति तथा समग्र मानसिक स्वास्थ्य – में दोनों समूहों के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संज्ञानात्मक दृष्टि से छात्र आगे हैं जबकि भावनात्मक दृष्टि से छात्राएँ श्रेष्ठ हैं, शेष सभी मानसिक स्वास्थ्य घटकों में दोनों समूह तुलनीय हैं।

तालिका 14 माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन (N=300)

क्र.	घटक	माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ)150)		उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र)150)		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD	CR	0.05	0.01
1	संज्ञानात्मक	28.15	5.18	27.11	5.10	1.75	NS	NS
2	सामाजिक	30.20	5.15	28.14	4.98	3.52	S	S
3	भावनात्मक	30.25	5.70	30.18	5.21	0.111	NS	NS
4	शारीरिक	28.15	5.12	31.10	5.55	4.78	S	S
5	आत्म सम्मान	30.16	5.19	31.24	5.17	1.80	NS	NS
6	आत्म प्रभावकारिता	27.20	5.10	29.16	5.18	3.30	S	S
7	जीवन अभिवृत्ति	30.45	5.30	26.15	4.96	7.26	S	S
8	समग्र मानसिक स्वास्थ्य	204.56	15.35	203.08	15.15	0.840	NS	NS
	df						1.96	2.59

तालिका 14 में माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों की तुलना प्रस्तुत की गई है। सामाजिक क्षेत्र में छात्राओं का माध्य (30.20) छात्रों (28.14) की तुलना में अधिक है, और यह अंतर 0.01 स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण (CR = 3.52) पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्राएँ सामाजिक रूप से अधिक सक्षम हैं। इसी प्रकार, आत्म-प्रभावकारिता में छात्र (M=29.16) छात्राओं (M=27.20) की अपेक्षा अधिक सक्षम पाए गए तथा यह अंतर भी 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण (CR = 3.30) रहा। शारीरिक क्षेत्र में भी छात्रों का प्रदर्शन (M=31.10) छात्राओं (M=28.15) की तुलना में बेहतर है और यह अंतर अत्यधिक महत्वपूर्ण (CR = 4.78) रहा। जीवन अभिवृत्ति के क्षेत्र में छात्राएँ (M=30.45) छात्रों (M=26.15) से स्पष्टतः श्रेष्ठ रहीं, तथा यह अंतर भी 0.01 स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण (CR = 7.26) सिद्ध हुआ। संज्ञानात्मक, भावनात्मक, आत्म-सम्मान तथा समग्र मानसिक स्वास्थ्य में कोई भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। निष्कर्षतः, छात्राएं सामाजिक एवं जीवन अभिवृत्ति के क्षेत्र में आगे हैं जबकि छात्र शारीरिक एवं आत्म-प्रभावकारिता के स्तर पर श्रेष्ठ हैं, तथा शेष क्षेत्रों में दोनों समूह तुलनीय हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न घटकों—संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक,

शारीरिक, आत्म-सम्मान, आत्म-प्रभावकारिता एवं जीवन अभिवृत्ति—के स्तर में कुछ घटकों में समानता देखी गई, तो कुछ में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। संज्ञानात्मक, सामाजिक, आत्म-सम्मान जैसे घटकों में अधिकतर समूहों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जिससे संकेत मिलता है कि इन क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य का स्तर लगभग समान है। वहीं, शारीरिक, आत्म-प्रभावकारिता और जीवन अभिवृत्ति जैसे घटकों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने कुछ तुलनाओं में श्रेष्ठता दिखाई, जबकि भावनात्मक पक्ष में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और छात्राओं ने अधिक संतुलन प्रदर्शित किया। समग्र मानसिक स्वास्थ्य के स्तर की तुलना करें तो अधिकांश वर्गों में कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्तर व लिंग के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य में उल्लेखनीय अंतर नहीं है, केवल कुछ विशिष्ट घटकों में ही परिलक्षित अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण रहे। अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण, शैक्षणिक दबाव, आयुजनित परिवर्तन तथा पारिवारिक वातावरण मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं। अतः शिक्षकों, अभिभावकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं और परामर्शदाताओं को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने हेतु समेकित प्रयास करें। शिक्षक कक्षा में सहयोगात्मक एवं सकारात्मक परिवेश बनाएं, अभिभावक बच्चों के मानसिक एवं भावनात्मक विकास हेतु संवादशील वातावरण विकसित करें, पाठ्यक्रम निर्माता विद्यार्थियों के संवेगात्मक पक्षों को संबोधित करने वाले विषयवस्तु का चयन करें तथा परामर्शदाता विद्यार्थियों को उनकी रुचियों, क्षमताओं एवं समस्याओं के अनुरूप उचित मार्गदर्शन प्रदान करें। इस प्रकार अध्ययन न केवल मानसिक स्वास्थ्य की यथास्थिति को रेखांकित करता है, बल्कि इससे संबंधित विविध घटकों के मध्य अंतर्संबंधों की भी व्याख्या करता है जो शिक्षा-प्रणाली में गुणात्मक सुधार हेतु सहायक हो सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] हे एवं असमान ए.एफ. (2003), उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर छात्रों कीसामान्य स्व आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल एण्ड डिसिबेलिटी डेवलप्मेंट एण्ड एजुकेशन, 50(1), पृ.77-91.

[2] चौधरी मीनाक्षी एवं आराधना (2006), "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर छात्रों की उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि और मानसिक स्वास्थ्य के मध्य अध्ययन", रिसर्च पेपर जनरल ऑफ साइक्लॉजी लिग्वा वाल्यूम 37(02), पृ.175-179.

[3] रहमत उल्लाह टी.के., राजू एम.ब्ही.आर. (2007), "विद्यालयी छात्र-छात्राओं के मध्य समायोजन की समस्या का अध्ययन" जनरल ऑफ द इंडियन अकेडमी आफ एप्लाइड साइक्लॉजी 33 (01), पृ.73-79.

[4] हुसैन ए कुमार और हुसैन ए (2008), उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत किशोर छात्रों की तनाव भग्नाशा एवं समायोजन का अध्ययन, जनरल ऑफ द इंडियन अकेडमी आफॅ एप्लाइड साइक्लॉजी, 34(01).

[5] गुप्ता गरिमा एवं सुशील कुमार (2010), "किशोर विद्यार्थियों की स्वयं की प्रभावकारिता और संवेगात्मक बुद्ध से मानसिक स्वास्थ्य के

बीच सम्बन्धों का पता लगाने के लिए अध्ययन", रिसर्च पेपर जनरल ऑफ इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइक्लॉजी वाल्यूम 36(01), पृ.61-67.

[6] जैन मृदुला (2010), "कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन निराशा एवं आकांक्षाओं के स्तर के प्रभाव का अध्ययन", पी.एच.डी. इन एजुकेशन, आगरा विश्वविद्यालय.

[7] सिंह आर. पी. (2012), "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य सृजनात्मकता के सम्बन्ध में समायोजन निराशा एवं आकांक्षा के स्तर का अध्ययन", पी.एच.डी. इन एजुकेशन आगरा विश्वविद्यालय.

[8] बासु एस. (2012), "माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य पारिवारिक संरचना लिंग एवं कक्षा के दिशा निर्देशन एवं समायोजन की योग्यता का पता लगाना", स्कालरली रिसर्च जनरल आफ इंन्टरडीसीप्लीनरी स्टडीस, नवम्बर, वाल्यूम 01(3), पृ.430-438.

[9] प्रतिमा एच.पी. एवं डॉ. यू. कुलसम (2013), "माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के बारे में अध्ययन",एजुकेशन विभाग, बैंगलौर यूनिवर्सिटी, इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वाल्यूम 2(11), पृ.70-73.

[10] जयस्वाल एवं कुमार (2013), माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मध्य शासकीय एवं अशासकीय दोनों गुरपो के मध्य मानसिक स्वास्थ्य के बारे में अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ विहेवीरियल एण्ड मूवमेंट साइंस, वाल्यूम 02(2), पृ.31-36.